

MS. MABEL REBELLO: Sir, I have a straight question. Just now, it was said that the TTE was carrying six crore of money when the CBI raided. I want to know whether the TTE had really collected the money or he was a conduit for some other money of some businessman or somebody else. It is not possible for him to collect six crore. of rupees in one journey.

SHRI E. AHAMMED: Mr. Chairman, Sir, according to the information which I have, this particular culprit, this delinquent TTE, on examination and raid, had only about forty thousand rupees, and, not an amount of six crore of rupees, which is being mentioned. As per the information given to me after all the calculations and all these things, under no circumstances, even if all these things are used, it could be six crore of rupees, because as per the book taken from him, it can have forty thousand of rupees. ... (Interruptions)... Therefore, as per my information, six crore of rupees is not reasonable amount. ... (Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: Question No. 203. (Interruptions)

श्री के.बी. शण्पा : सर, वे 6 करोड़ रुपए किधर गए? ... (व्यवधान)... Where is that money? (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: No interjection, please. ... (Interruptions)... No interjection.

सुश्री मैबल रिबेलो : वे रुपए कहां से आए ... (व्यवधान)... वे किधर गए नहीं, बल्कि कहां से आए? ... (व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Ms. Rebello, you have asked your question. That is enough. (Interruptions) No, no. नहीं, आप बैठ जाइए! ... (व्यवधान)... Question No. 203

रसायनों के प्रयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी

*203. श्री बृजभूषण तिवारी :††

श्री भगवती सिंह :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि रसायनों के प्रयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है जिससे खेत बंजर होते जा रहे हैं;

(ख) यदि हां, तो सरकार भूमि को खेती योग्य बनाने के लिए क्या उपाय कर रही है तथा भूमि को प्रभावित करने वाले रसायन कौन-कौन से हैं; और

(ग) तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

कृषि मंत्री (श्री शरद पवार): (क) से (ग) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) से (ग) देश में कृषि मुख्यतः उपयोगित रसायनों जैसे नाइट्रोजनी, फोस्फेटिक और पोटैसिक रसायन उर्वरकों और पंजीकृत कीटनाशियों के सन्तुलित और विवेकपूर्ण उपयोग के कारण मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता को क्षति होने की कोई सूचना नहीं है। तथापि, रसायनिक उर्वरकों के असन्तुलित और अविवेकपूर्ण प्रयोग से देश के कुछ भागों में मृदा स्वास्थ्य और उत्पादकता पर प्रभाव देखा गया है। सरकार द्वारा कृषि के लिए मृदा स्वास्थ्य के रख-रखाव और विकास के लिए किए जा रहे उपायों का ब्यौरा निम्नलिखित है:-

(i) कृषि एवं सहकारिता विभाग की विभिन्न स्कीमों जैसे राष्ट्रीय जैव कृषि परियोजना, राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता प्रबंधन परियोजना आदि के तहत जैव खाद और जैव उर्वरकों के उपयोग को प्रोत्साहन।

†† सभा में यह प्रश्न श्री बृजभूषण तिवारी द्वारा पूछा गया।

- (ii) राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता प्रबंधन परियोजना के तहत उर्वरकों के मृदा परीक्षण आधारित उपयोग को प्रोत्साहन।
- (iii) किसान फील्ड स्कूलों के आयोजन द्वारा किसानों के प्रशिक्षण के माध्यम से समेकित कीट प्रबंधन कार्यक्रम।

Depletion of fertility of land due to use of chemicals

†*203. SHRI BRIJ BHUSHAN TIWARI:††

SHRI BHAGWATI SINGH:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government is aware that due to use of chemicals, the fertility of land is being destroyed and as a result the farms are turning barren;
- (b) if so, the measures being taken by Government to make the farms cultivable and the names of the chemicals which are affecting the land; and
- (c) the details thereof?

THE MINISTER OF AGRICULTURE (SHRI SHARAD PAWAR): (a) to (c) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) to (c) Balanced and judicious use of chemicals such as nitrogenous, phosphatic and potassic chemical fertilizers and registered pesticides, primarily used in agriculture in the country is not known to cause damage to soil health and fertility. However, imbalanced and injudicious use of chemical fertilizers has been observed to have affected soil health and productivity in some parts of the country. Details of measures being taken by the Government for maintenance and improvement of soil health for cultivation are as follows:

- (i) Encouragement to use of organic manure and bio-fertilizers under different schemes of Department of Agriculture & Cooperation such as the National Project on Organic Farming, the National Project for Management of Soil Health & Fertility etc.
- (ii) Encouragement to soil test based use of fertilizers under the National Project for Management of Soil Health & Fertility.
- (iii) Integrated Pest Management programme through training of farmers by organizing Farmers' Field Schools.

श्री बृजभूषण तिवारी : सभापति महोदय, मेरे प्रश्न का जो उत्तर अभी दिया गया है, वह बहुत ही अस्पष्ट है। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि क्या आपने कोई सर्वेक्षण किया है कि पूरे देश में, अलग-अलग राज्यों में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटैशियम के प्रयोग में बड़े पैमाने पर असमानता है? वैज्ञानिकों के अनुसार इनके प्रयोग का अनुपात 4:2:1 का होना चाहिए। क्या यह सही है कि पंजाब और कुछ अन्य राज्यों में यह अनुपात 25:2:1 का हो गया है? यदि यह सही है तो इस का क्या असर पड़ा है?

श्री शरद पवार : मैंने जवाब में साफ किया है कि यदि recommended dose का इस्तेमाल किया जाए तो इसका असर अच्छा होता है, बुरा नहीं होता, लेकिन अगर recommended dose से ज्यादा dose दे दिया, तो इसका असर होता है और इस संबंध में थोड़ी-बहुत जांच की गई है। Indian Council of Agricultural Research ने

† Original notice of the question was received in Hindi

†† The question was actually asked on the floor of the House by Shri Brij Bhushan Tiwari.

पंजाब, हरियाणा और वेस्टर्न यू.पी., इन तीन राज्यों में स्टडी की है और यह बात सामने आई है कि जहां ज्यादा इस्तेमाल किया गया है, वहां soil fertility पर बुरा असर हुआ है और खास तौर पर Indo-Gangetic plains में यह स्थिति सामने आई है। दूसरे अपने यहां भोपाल में Indian Institute of Soil Science है जोकि इस क्षेत्र में continuously काम करती है और ध्यान देती है। उनके यहां भी इसी तरह का record है। उन के 11 जगहों पर सेंटर्स हैं और ये सेंटर्स इस बारे में क्या असर हो रहा है, देखते हैं और किसानों को सलाह देते हैं। मगर सभी जगहों का observation यही है कि अगर balancely use किया है तो ठीक है, उसकी आवश्यकता है, लेकिन अगर imbalancely or injudiciously use किया जाए तो उसका असर होता है। यह काम करने के लिए ज्यादा ध्यान organic और बाकी fertilizers के इस्तेमाल पर दिया गया है और उस एरिया को encourage करने के लिए स्क्रीम हाथ में ली गई है।

श्री वृजभूषण तिवारी : महोदय, मेरे प्रश्न का यह जो "ब" भाग है, उसके बारे में मंत्री जी ने अपने उत्तर में इन तमाम योजनाओं व संगठनों का जिक्र किया है। मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि इसकी जमीनी हकीकत क्या है क्योंकि विभिन्न राज्यों में सरकार द्वारा जो संस्थाएं बनाई गई हैं, कार्यरत हैं, उनके कार्यों की क्या प्रगति है? उनका इस पर कोई असर पड़ा है या नहीं?

श्री शरद पवार : Organic farming का और bio-fertilizers का भी अच्छा असर होता है, इसमें कोई दो राय नहीं हैं। इसके साथ vermicompost को भी encourage करने का काम किया गया है। अभी अपने यहां कुछ स्कीम्स आई हैं। Horticulture Mission में vermicompost हो या organic farming के क्षेत्र में किसी ने लिया हो तो उनको ज्यादा सहयोग व ज्यादा मदद करने के लिए यहां provision किया गया है और इससे फर्क पड़ रहा है। फर्क ऐसा हो रहा है कि वर्ष 2003-2004 में अपने देश में organic farming का एरिया 42 हजार हैक्टेयर था जो आज 4 लाख 64 हजार हैक्टेयर पर पहुंच गया है। यह बहुत है, ऐसा नहीं है, मगर इस रास्ते पर किसान आज जा रहे हैं और उनको यह बात पसंद है। आज organic और साथ-साथ vermicompost की आवश्यकता को किसान स्वीकार करने लगा है।

श्री भगवती सिंह : मान्यवर, माननीय मंत्री जी ने यह स्वीकार किया है कि रासायनिक उर्वरकों के असंतुलित और अविवेकपूर्ण प्रयोग से देश के कुछ भागों में स्वास्थ्य तथा उत्पादकता पर प्रभाव पड़ा है। मान्यवर, माननीय मंत्री जी से मैं जानना चाहता हूँ कि क्या जमीन के अलावा इसका दुष्प्रभाव मनुष्य पर भी पड़ा है और क्या यह सच है कि कीटनाशक दवाओं के कारण पंजाब में मनुष्यों के खून में स्वीकार्य अनुपात से ज्यादा pesticide पाया गया है?

SHRI SHARAD PAWAR: Sir, I don't think this question is related to it. But I know a little bit about the pesticide residue in some of the items because I headed a Parliamentary Committee on this subject. It has been proved that there are certain areas where fertilizers have been used injudiciously and that does affect vegetables, fruits and even the health of human beings and animals.

श्री भगवती सिंह : मान्यवर ...

श्री सभापति : आपका सवाल हो गया।...(व्यवधान)... No second question. श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : श्रीमान्, विश्व भर में कृषि वैज्ञानिकों ने अनुसंधान के बाद यह पाया है और उसकी रिपोर्ट भी मौजूद है कि chemical fertilizer के लगातार इस्तेमाल से जमीन या soil की moisture retention capacity और उसमें मौजूद organic substances, जो खेती के लिए बड़ी जरूरी हैं, उन दोनों का लगातार ह्रास होता है। इस रिपोर्ट के संदर्भ में एक recommendation आई थी, जिसके अनुसार इस बात की कोशिश की जानी चाहिए कि जो कम्पोस्ट या ऑर्गेनिक खाद है, वह जमीन को समय-समय पर periodically जरूर मिलनी चाहिए, ताकि उसकी fertility improve होती रहे। मैं यह जानना चाह रहा हूँ कि हमारे भारत जैसे देश में जहां 100 करोड़ से ज्यादा की आबादी है, एक बड़ा भारी स्रोत यह हो सकता है कि बड़े-बड़े शहरों और नगरों में जो human waste निकलता है, जो कि एक तरह से हमारे लिए समस्या है, उस waste को अगर proper management और treatment के बाद कम्पोस्ट खाद में convert करने का प्रयास किया जाता, तो न केवल हमारी उस गंदगी को दूर करने की एक बड़ी समस्या का समाधान होता, बल्कि हमारी soil fertility जो निरंतर कमजोर होती जा रही है, उसके लिए ऑर्गेनिक खाद भी उपलब्ध हो जाती।

मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से यह जानना चाहता हूँ कि इस पर अनेक बार विचार किया गया है और इस पर चर्चा भी हुई है, तो क्या सरकार ने इस दिशा में, जो बड़े-बड़े विभिन्न शहर हैं, बड़े-बड़े नगर हैं, वहां के सीवेज प्लांट्स में ऑर्गेनिक खाद में बदलने के प्लांट्स लगाने की किसी बड़ी योजना पर विचार किया है? यदि हां, तो वह योजना कब तक पूरी होगी और कब लागू की जाएगी? इस बारे में कृपया मंत्री जी बताने का कष्ट करें।

SHRI SHARAD PAWAR: There are two opinions about the usefulness of the organic fertilisers. Definitely, it is useful. But, the suggestion which has been made here is mainly restricted to urban areas. In fact, the Agriculture Ministry doesn't handle the sewage plants in urban areas and others. It is the responsibility of the civic bodies. We do try to communicate to all the civic bodies that they should try to encourage and they should try to set up these plants which will be ultimately useful and will be a sort of paying proposition also for these institutions.

DR. (SHRIMATI) NAJMA A. HEPTULLA: Sir, the hon. Minister for Agriculture answered about the use of chemical fertilisers which spoils the fertility of the agricultural land. Also, excess use of watering or irrigation brings the salinity up to the surface as a result of which fertility of the land and health is affected. As it has been observed in the Euphrates and Tigris valley of Iraq, excess irrigation has affected the fertility of the land? Is it happening in our country also?

SHRI SHARAD PAWAR: Here, excess irrigation is also creating problem, particularly where there is deep black soil. We have seen in many areas where there is deep black soil that water-logging has created serious problems. There are certain areas in Punjab, Haryana, Andhra Pradesh and Maharashtra where too much water has definitely created problem and that is why, continuously, a sort of education about the importance of judicious use of water has been given through the universities and others and also through the extension services.

SHRI TIRUCHI SIVA: Sir, the lessons taken by the Government for maintenance and improvement of soil health for cultivation are mainly related to the farmers like encouraging them to use organic manures and bio fertilisers, encouraging them to soil test based use of fertilisers and training them through integrated pest management programme. Sir, I would like to ask the hon. Minister: What is the present arrangement for checking the quality of the fertilisers manufactured? Are they up to the prescribed standard?

SHRI SHARAD PAWAR: Sir, as you see, there is a certain process which has been taken by the Government of India with the help of State Governments, particularly to create awareness in the farmers, about the impact of this indigenous use of fertilisers and chemicals. We have, practically, taken certain samples, in fact, in the year 2007-08. The Department has taken more than 69.68 lakh samples of the soil and an analysis was made, and has been communicated to the farmers. In the last Budget, the Government of India has taken a decision to set up 500 new soil testing laboratories and 250 mobile soil testing laboratories which will, ultimately, help the farmers, give them a card. Our desire is to provide a Soil Health Card to each and every farmer in the country. That process has been started and that soil Health Card will give him the guidance about how much and what type of fertilisers he should use and what, exactly, is the deficiency there. And we are absolutely confident that it will benefit the beneficiary. Simultaneously, we are also propagating to use organic compost and vermicompost.

MR. CHAIRMAN: Question 204. ...*(Interruptions)*...

SHRI TIRUCHI SIVA: Sir, what about checking the quality of fertilisers? ...*(Interruptions)*... He has not answered that. ...*(Interruptions)*... They are manufacturing fertilisers, Sir. ...*(Interruptions)*...

AN HON. MEMBER: It is a very important question, Sir. ...*(Interruptions)*... I have a supplementary on this.

Supply of fertilizers

*204. SHRI JESUDASU SEELAM:††

DR. T. SUBBARAMI REDDY:

Will the Minister of CHEMICALS AND FERTILISERS be pleased to state:

(a) whether Government has taken various measures to ensure supply of fertilizers required by farmers during 2009 kharif season;

(b) if so, what is the total quantity of fertilizers supplied to farmers in each State;

(c) whether States of Karnataka and Andhra Pradesh have increased fertilizer supply to farmers;

(d) if so, what is the total quantity supplied to States by Union Government for distribution to farmers; and

(e) what is the position of fertilizer stocks in each State?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI SRIKANT JENA) : (a) to (e) A statement is laid on the table of the House.

Statement

(a) to (e) Yes, Sir. State-wise, month-wise requirement, availability, sales and closing stock of Urea, DAP, MOP and complex fertilizers during Kharif 2009 (April - June, 2009) is given in the enclosed Statement (see below). As can be seen, the availability of urea has been adequate enough to sustain the sales. There is no shortage of DAP and MOP in the country, however, there may be little tightness in availability of complex (NPK) fertilizers because of low level of indigenous production and also as these can not be imported as they are not covered under existing concession scheme.

The steps taken for smooth distribution and increasing the production of fertilizers are as under:

- i) The movement of fertilizers will be monitored throughout the country by an on-line web based monitoring system (www.urvarak.co.in) also called as Fertiliser Monitoring System (FMS);
- ii) The subsidy on fertilizer is being paid only when it reaches the district;
- iii) Department of Fertilizers has notified uniform freight subsidy scheme to transport fertilizers upto block level.
- iv) The gap between requirement and indigenous availability of Urea is met through imports; and
- v) New pricing policy for attracting investment in urea sector has been announced on 4th September, 2008. Further, fertilizer sector has been given highest priority in allocation of gas, for debottlenecking, expansion and revival projects in the country.